

# संस्कृति

आदि से अनंत तक

तृतीय  
संस्करण  
2023-24



## सांस्कृतिक चेतना परिषद्

गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर





आजाद रहे विचारों से  
जुड़े रहे संस्कारों से

अस्माकं संस्कृति  
अस्माकं कर्तव्यम्





## डॉ० मनमोहन सिंह चौहान कुलपति

ज्ञान गंगा में नए विचार और ऊर्जा जोड़ने का कार्य कर, युवा अपने राष्ट्र के भविष्य का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनका उत्साह व जीवन शक्ति समाज में नई खोज एवं विकास को प्रोत्साहित करता है। भारतीय संस्कृति का विकास करने में भी युवा पीढ़ी का अहम योगदान है। आज युवा चाहें तो संस्कृति के मार्ग को वैज्ञानिक आधारों से जोड़कर बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।

भारत भूमि को प्रतिष्ठित गौरव प्रदान कराने वाले विश्वविद्यालयों में से एक, गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर ने लंबे समय से अपने छात्र-छात्राओं के योगदान द्वारा देश की जरूरतों और उपलब्धियों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अपनी स्थापना से ही सांस्कृतिक चेतना परिषद् ने स्वयं को भारतीय संस्कृति के संरक्षण व प्रसार के लिए समर्पित किया है।

परिषद् द्वारा कराया जाने वाला कार्यक्रम "नवारम्भ" प्रत्येक वर्ष किसी न किसी मुख्य विषय से संरेखित कर अनेकों रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत कर युवा पीढ़ी को अपनी संस्कृति से जोड़ने का कार्य कर रहा है। यह देखकर मैं बहुत गौरवान्वित महसूस करता हूँ कि छात्र "संस्कृति" पत्रिका में सामाजिक मुद्दों और राष्ट्रीय महत्व के मामलों को व्यक्त करने के लिए अपनी लेखन क्षमताओं का उपयोग भलीभांति करते हैं। यह उनके विचारों के साथ-साथ देशभक्ति की उनकी सहज भावना को जीवंत करने के लिए उपयोगी है।

मैं अधिष्ठाता छात्र कल्याण, स्टाफ कॉउंसलर एवं सांस्कृतिक चेतना परिषद् से जुड़े समस्त छात्रों को उनके अद्भुत कार्य के लिए शुभकामनाएं देना चाहता हूँ। मुझे यह भी आशा है कि परिषद् भविष्य में भी राष्ट्रीय संस्कृति हेतु बढ़-चढ़ कर निरन्तर कार्य करती रहेगी।

भारतीय नववर्ष 2081 के उपलक्ष्य पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं।



## डॉ. बृजेश सिंह अधिष्ठाता, छात्र कल्याण

भारत ने समूचे विश्व के समक्ष अपनी उपलब्धियों द्वारा इस माटी की क्षमताओं को सिद्ध किया है। विश्व की सबसे पुरानी सभ्यता वाला देश होने के साथ ही, भारत नई चेतना, नई उमंग और नए विश्वास के साथ अपने अतीत को सहेजते हुए भविष्य की ओर बढ़ रहा है। आज जब सम्पूर्ण विश्व आधुनिकता के अधीन हो गया है, वहीं सदियों से भारतीयों ने अपने परंपरिक मूल्यों को जीवनशैली में मुख्य रूप से धारण किया हुआ है। हमारी जगतजननी भारत भूमि में उत्पन्न यह संशोधित संस्कृति में विज्ञान व तत्त्वज्ञान के अनेकों गुण विद्यमान हैं, जिसने अनेकों आत्मविचारकों का मार्गदर्शन किया है। अतः आधुनिक काल में अपनी संस्कृति का गहन अध्ययन अत्यंत ही आवश्यक है।

इस अध्ययन की ओर ध्यान केंद्रित करने हेतु 'संस्कृति' पत्रिका का तीसरा संस्करण प्रकाशित किया गया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि परिषद् के छात्र सदस्यों का योगदान समाज को अपनी संस्कृति के प्रति दायित्वों को समझाने में साकार होगा। मैं समस्त सदस्यों को उनके निरंतर प्रयासों के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

## डॉ. एस. के. कृथप अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय



भारत विश्व में अपनी सांस्कृतिक विरासत एवं वैज्ञानिक सोच के कारण जाना जाता है। आज विश्व में योग और अध्यात्म का प्रचार-प्रसार हो रहा है, जिसका लाभ सम्पूर्ण मानव जाति को हो रहा है। आवश्यकता है कि भारतीय युवा अपनी सांस्कृतिक विरासत और इसकी वास्तविकता को समझें और उस अनुरूप अपनी जीवन पद्धति विकसित करें। इसी में सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण निहित है।

युवा पीढ़ी को अपनी संस्कृति से जोड़कर उस अनुरूप जीवन जीने की प्रेरणा देने हेतु विश्वविद्यालय अनेक उपक्रम करता रहता है। छात्र कल्याण विभाग द्वारा संचालित सांस्कृतिक चेतना परिषद् इस दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। इसके द्वारा समय-समय पर संचालित कार्यक्रमों के आयोजन से नई पीढ़ी को अपने जीवन मूल्यों से जुड़ने का अवसर प्राप्त हो रहा है। मैं अधिष्ठाता, छात्र कल्याण, स्टाफ काउंसलर, सांस्कृतिक चेतना परिषद् एवं इसकी छात्र कार्यकारिणी को उनके प्रयासों हेतु हार्दिक शुभकामनायें देता हूँ। साथ ही भारतीय नववर्ष के अवसर पर प्रकाशित संस्कृति पत्रिका के सम्पादक मण्डल को भी बधाई देता हूँ। मेरा विश्वास है कि विश्वविद्यालय में इन महत्वपूर्ण गतिविधियों का प्रवाह निरंतर बना रहेगा।

पुनः हार्दिक शुभकामनाओं सहित।



## डॉ. विनीता राठौड़ स्टाफ काउंसलर, सांस्कृतिक चेतना परिषद्

संस्कृति के माध्यम से जाति या समुदाय के उन समस्त संस्कारों का बोध किया जाता है, जिनके सहारे वह अपने आदर्शों, जीवन मूल्यों आदि का निर्धारण करते हैं। इस भूमि की सांस्कृतिक विरासत में ऐसे अनेक गुण, विद्यमान हैं, जो न सिर्फ भारत, बल्कि समूचे विश्व की प्रगति, विकास और मानव जाति के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करते हैं। परन्तु आज इस महान विरासत पर गर्व करने के साथ-साथ इसे सुरक्षित, संरक्षित व इसकी प्रामाणिकता और तथ्यपरक पक्षों को जनमानस के बीच पहुँचाना भी आवश्यक है। इस दौर में जहाँ तकनीकी की धुंध में बाकी सब कुछ अनदेखा किया जाता है, वहां प्रयासों से उज्ज्वल एक दिया भी मार्गदर्शन हेतु पर्याप्त होता है।

विभिन्न कालखंडों में घटित अनउपेक्षनीय घटनाओं और सम्बन्धित किरदारों में संस्कृति की महत्ता का उल्लेख कर, “संस्कृति” पत्रिका का तीसरा संस्करण प्रकाशित किया गया है। मैं परिषद् से जुड़े सभी छात्र सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएं देती हूँ और आशा करती हूँ कि वे सदैव ही राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों को पूरा करने हेतु अग्रसर रहेंगे और समाज को भी राष्ट्रहित के लिए कार्य करने हेतु प्रेरित करेंगे।

भारतीय नववर्ष २०८१ की हार्दिक शुभकामनाएं।

## डॉ. किरण राणा सह - स्टाफ काउंसलर, सांस्कृतिक चेतना परिषद्



भारतीय संस्कृति हमें नैतिक मूल्यों, समाजिक सहयोग, और धार्मिकता की महत्वाकांक्षा सिखाती है। यह हमें समृद्धि और शांति की दिशा में अग्रसर करती है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखें, भारतीय संस्कृति ने विज्ञान, गणित, और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है; जहाँ हमारे पूर्वजों ने गणित में शून्य की खोज की वहाँ वैज्ञानिक धारणाओं को आगे बढ़ाने में भी योगदान दिया। भारत की प्रगति के संदर्भ में, हमारी संस्कृति हमें समृद्धि, समाज की उन्नति, और तकनीकी विकास की दिशा में आगे बढ़ने में मदद करती है व हमें अग्रणी बनाती है। जहाँ अभी तक हमारी संस्कृति ने हम सभी को जोड़े रखा हुआ है वही यह भी आवश्यक है कि हम भी बढ़ते समय के साथ-साथ अपनी संस्कृति को और समझेंगे व और जानें।

इन्हीं सब विचारों के साथ भारतीय संस्कृति की महत्ता दर्शाते हुए, “संस्कृति” पत्रिका का तीसरा संस्करण प्रकाशित किया गया है। मैं सभी सदस्यों को उनके उत्कृष्ट प्रयासों के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देती हूँ व आशा करती हूँ कि आगे भी सभी इसी प्रकार अपनी संस्कृति व राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों को समझेंगे व उन्हें पूरा करने का प्रयास करेंगे।



## सुषमा स्वामी छात्र अध्यक्ष

मानव जीवन की उत्कृष्टता, व्यक्तिगत प्रेरणा पर आधारित होती है। यदि वह अंतः प्रेरणा सह-अस्तित्व, बंधुत्व, सौहार्द, वसुधैव कुटुम्बकम् व सर्वे भवन्तु सुखिनः आदि का संयोजन है, तो निश्चय ही वह मानव-जीवन उच्च कोटि के मनीषियों जैसा लोकमंगलकारी होगा। किंतु यदि मानव की विचारधारा मात्र लोकवासना, दुराचार व अज्ञानता पर आधारित हो, तो जीवन दुर्गति की ओर प्रचलित रहेगा। दुर्मार्ग तथा सद्व्याग के इसी अंतर पर प्रकाश डालते हुए जीवन की श्रेष्ठता के शिखर की ओर मार्ग प्रशस्त करने वाली शैली को ही, भारतीय संस्कृति ने सदियों से अपने आँचल में समाहित किया हुआ है। यह मात्र भारत की सीमाओं में बंधित नहीं रही, बल्कि एक वैश्विक संस्कृति के रूप में जग को प्रकाशित करती रही है। जिसने असंख्य लोकरत्नों को जन्म देकर विश्व में मानवता, धार्मिकता और आध्यात्मिकता के आदर्शों को युग-युगांतर तक जीवंत रखा है।

युवा के मस्तिष्क में पुरातन भारत के अतुल्य मूल्यों का पुनर्जागरण करती यह पत्रिका, समकालीन विश्व में समाज के आधार स्तंभों की विवेचना करने हेतु एक सकारात्मक पहल है। आशा है कि हम सभी युवा, राष्ट्रीय- सांस्कृतिक चेतना को मज़बूत करने में सदैव ही प्रयासरत रहेंगे।

## नन्दिनी मिश्रा छात्र महासचिव



भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक हैं। भारतीय संस्कृति का गौरवशाली इतिहास हर भारतीय के हृदय में एक अमूल्य धारणा है। अंग्रेजों द्वारा सदियों तक माँ भारती की आत्मा को छलनी करने के पश्चात भी, इस भारतीय संस्कृति की ध्वज पताका अविरल लहराती रही। इसी की भविष्य ध्वजवाहक, हमारी युवा शक्ति। इसी युवा मन के अनंत विचारों से पुष्पित पल्लवित हैं, यह 'संस्कृति' पत्रिका। पत्रिका के तृतीय संस्करण में प्रस्तुत हैं, माँ भारती का प्रगति पथ। संघर्ष से गढ़नित होते उदय से आज भारत का नवाचारों की भूमि बन जाने तक का पथ। आज भारत विश्व भर के लिए उदयमान सूर्य की तरह प्रकाशमान हैं। मैं आशा करती हूँ, हमारे इस प्रयास को आप सभी से सराहना और स्नेह अवश्य प्राप्त होगा।

आप सभी को भारतीय नव वर्ष २०८१ की हार्दिक शुभकामनाएं।



## अदित्य सिंह छात्र उपाध्यक्ष

हमारी युवा शक्ति हमारे देश की अनमोल धरोहर है। उनमें विद्या, संवेदनशीलता, उत्साह और सहयोग की भावना से हमारे देश का विकास निश्चित है। "संस्कृति" पत्रिका, संस्कार और भारतीय युवा के विकास पर केंद्रित है। हम इस पत्रिका के माध्यम से युवा पीढ़ी को आह्वानित करते हैं कि "आज्ञाद रहें विचारों से, जुड़े रहें संस्कारों से" ताकि आज की युवा पीढ़ी हमारी संस्कृति को समझें और सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के लिए प्रतिबद्ध रहें। हमारी संस्कृति में नम्रता, सजीवता, सम्मान, विनम्रता और समानता के सिद्धांत हैं। हमारे लेखक और संपादकों का लक्ष्य है कि पाठकों को विशेषज्ञता, संदेश और संवाद के माध्यम से सक्षम और समृद्ध बनाने के लिए प्रेरित किया जाए। हमारी पत्रिका एक संवादमय, विचारशील और ज्ञानवर्धक मंच है जो समाज के सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है। हम आशा करते हैं कि संस्कृति, विरासत और युवा शक्ति का यह संस्करण आप सभी के विचारों को एक नया दिशा देगा।

## संपादकों की कलाम से :



**अदिति बिष्ट**



**निहारिका देवी**

राष्ट्र निर्माण की क्रिया में संस्कृति एक अहम स्तम्भ की भाँति है, और राष्ट्र के बुद्धिजीवी नागरिक, इस स्तम्भ की नींव डालने का कार्य करते हैं। इस गौरवशाली भूमि के प्रत्येक युग में अवतरित दिव्य पुरुषों ने भारत को एक तीर्थ के रूप में ग्रहण किया है। उनके पावन स्पर्श से, हमारे प्रतिष्ठायुक्त इतिहास का निर्माण हुआ और इन विजयी रचेताओं को प्रेरणा प्रदान की हमारी सुशोभित संस्कृति ने, जो पूर्णतः तपस्या और मानव कल्याण हेतु समर्पित है। अपनी संस्कृति का सम्मान करना हमारा कर्तव्य है, एवं इस महान संस्कृति के अस्तित्व को सृजनात्मक रखने हेतु हमारी युवा पीढ़ी का सचेत अंतःकरण होना आवश्यक है।

सांस्कृतिक चेतना परिषद् राष्ट्र को सक्षम और सामर्थ्यशाली बनाने में अपना योगदान देने का संकल्प रखता है। इस देश के युवाओं को अपनी संस्कृति से जोड़ने के लिए और राष्ट्र के प्रति अपनी ज़िम्मेदारियों का आभास कराने हेतु, 'संस्कृति' पत्रिका, शब्दों के समावेश द्वारा किया गया एक प्रयास है। हम आशा करते हैं कि हमारा कार्य समाज में सकारात्मक विचारों को प्रोत्साहित करेगा।

# अनुक्रमणिका

**10** सांस्कृतिक चेतना परिषद के सदस्य

**12** संघर्ष से गढ़नीत उदयः हमारी उद्यम यात्रा

**14** भारत की परंपरागत अस्परधीय शिक्षा प्रणाली

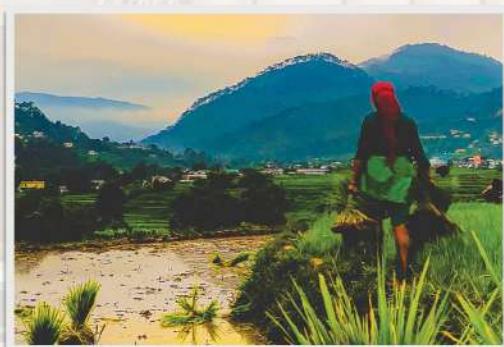
**16** संस्कृत नागरिकों का कोष बनाती भारतीय संस्कृति

**18** साहित्य और स्वतंत्रता : अभिव्यक्ति से प्रबुद्धता तक

**20** अंतर्मन की कलम से



हर्षल तिवारी  
कृषि महाविद्यालय, द्वितीय वर्ष



निधि पांडे  
सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय,  
प्रथम वर्ष

दीक्षा जोशी  
कृषि महाविद्यालय, अंतिम वर्ष



निधि पांडे  
सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय, प्रथम वर्ष

अर्पित कौशिक  
प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, द्वितीय वर्ष

भारतीय ग्रामों में सुरक्षित सांस्कृतिक विरासत : आत्मनिर्भरता का

**22**

1990-2023 : विकास के पथ पर स्वतंत्र भारत

**24**

अमृतकाल का गठन पौराणिक वेदत्व के संग

**26**

नवाचारों से समृद्धि: भारत का स्वाभिमानपूर्ण रूप

**28**

अंकुरण : नवाराख्म 2080

**30**

पलिका परिवार

**31**

# सांख्यिक चेतना परिषद् के सदस्य



सुषमा स्वामी  
छात्राध्यक्ष



नन्दिनी मिश्रा  
छात्र महासचिव



आदित्य सिंह  
उपाध्यक्ष



दीपांजन मुकुती  
संयुक्त सचिव



ज्योति  
उप महासचिव



प्रियांशु कुमार झा  
उप महासचिव



कृष्णा जोशी  
कोषाध्यक्ष



युगल अलचौरी



विधि तिवारी



तनवी गुप्ता



कुमकुम



डिम्पल महरा



सुनैना शर्मा



श्रेया गुप्ता



प्रियांशु दीक्षित



रोशन साहनी



अंकेश कुमार श्रीवास्तव



मनीष नेगी



भूमिका तिवारी



अदिति बिष्ट



आयुषी असवाल



आयुषी सुब्बा



निमिशा भट्ट



रवीना गुजाईं



आस्था रमोला



तरुण कुमार



निहारिका देवडी



नेहा पाण्डेय



मनीषा कंडवाल



मनीष बिस्वास



प्रर्णा जैन



हर्षित उपेती



भूमिका कांडपाल



हर्षित दुर्गापाल



हर्षल तिवारी



आयुषी जोशी



प्रद्युमन शर्मा



साजिया



श्रेया बिष्ट



तन्मय लोशाली



रचित पांडे



सपना



पूर्विमा चिलवाल



कविता पन्त



कीर्तिका तिवारी



हिना सैफी



राजबीर सिंह



हर्षिता सक्सेना



पूजा जोशी



आश्रया शुक्ल



त्रिष्वभ सिंगल



देव सलूजा



सारांश पांडे



अंशुल थापा



शिव दत्त



देवाशीष नाथ महंत



कार्तिक सैनी



दिव्या शर्मा



हर्ष कुमार



मंथन सोदाना



प्रांगलि टम्टा



गायत्री जोशी



दिशा गोस्वामी



विवेक जाधव



निधि घिल्डियाल



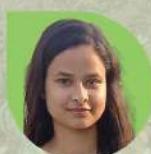
सूरज सनवाल



अर्जुन प्रताप सिंह



निधि पाण्डेय



मेघा परिहार



तमन्ना जोशी



सुमित कुमार तिवारी



पल्लव किश्वार



## संघर्ष से गढ़नीत उदयः हमारी उद्यम यात्रा ।

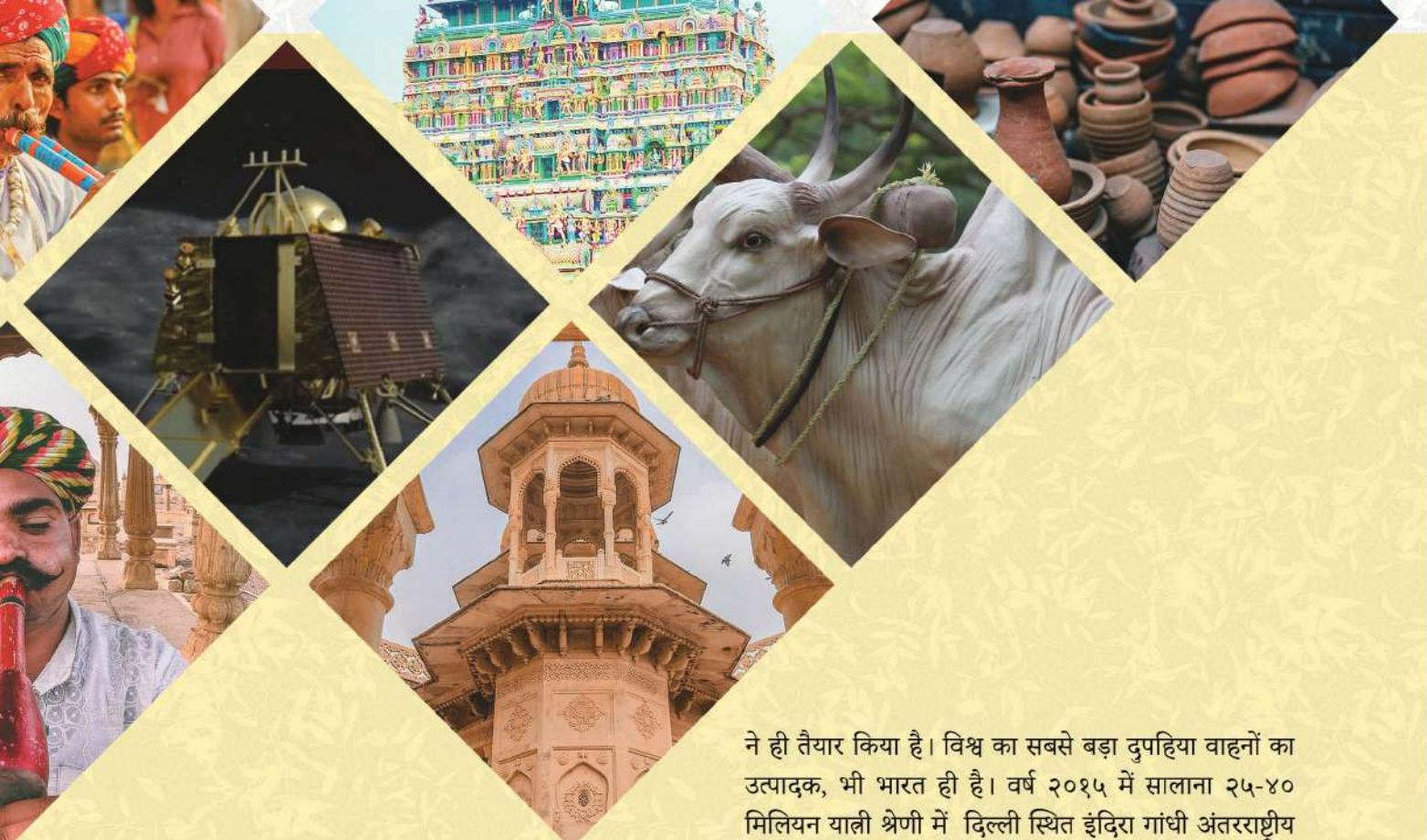
मानव इतिहास रूपी विशाल सागर में, अपार संकट एंव विपदाओं के मध्य भी युगों-युगों से भारत दृढ़ता, साहस एंव अटल संकल्प का प्रतीक बनकर अडिग खड़ा रहा है। इस गौरवशाली भूमि की उद्भव यात्रा केवल प्रगति की गाथा ही नहीं है, बल्कि ये गाथा है अथक संघर्ष, अविचलित मनोवृत्ति एंव अद्यता सांस्कृतिक समद्विधि की। समय-समय पर महापुरुषों ने सिखलाया है की जीवन एक संघर्ष है, और एक संघर्षहीन जीवन मृत्यु का पर्याय है। संघर्ष वह अज्ञात शक्ति है जो हम सभी को निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती आई है। संघर्ष उपरांत निर्मित भविष्य अपनी जड़ों से मज़बूत होता है, तथा अपनी गलतियों से सीखने का अवसर प्रदान करता है।

सोने की चिड़िया कहे जाने वाला यह महान देश भारत, सभी संसाधनों से परिपूर्ण था, भारत की क्षमताएँ विश्व का मार्गदर्शन करने हेतु तत्पर थीं। औपनिवेशिकताओं के दौर में भारत ने अपनी धरोहर का विशाल भाग खोया है। उस काल में भारत ने कई कठिनाइयों का सामना किया परन्तु क्रांतिकारी वीरों ने इस पवित्र भूमि को आजाद कर नूतन भविष्य का आगाज़ किया। जिसके बाद भारत के समक्ष कई नई चुनौतियाँ खड़ी थीं।

किसी भी राष्ट्र या सभ्यता के आने वाले कल की रूपरेखा खींचने वाली स्याही वहाँ की युवा पीढ़ी के हाथों से सँजोई जाती है, उस राष्ट्र का भविष्य निर्धारित होता है इस बात से की वह अपनी युवा पीढ़ी को किस स्तर की शिक्षा एंव संस्कार अन्तर्निविष्ट करता है।

स्वतंत्रता के बाद भारत शिक्षा के क्षेत्र में लगातार विकास कर रहा है। भारत की वर्तमान साक्षरता दर ७४.०१% है जो स्वतंत्रता के समय केवल १२% थी। शिक्षा के समर्थन ने हमारे देश में हरित क्रांति का प्रारम्भ किया, जिसके परिणामस्वरूप हमारे खाद्यान्न उत्पाद में चार गुना से भी अधिक की बढ़ोतारी हुई, हमने अपने दम पर अंतरिक्ष कार्यक्रमों में सफलता अर्जित की जिसका नवीनतम उद्घारण है चंद्रयान-२। भारतीयों द्वारा आईटी के क्षेत्र में भी अभूतपूर्व सफलता अत्यंत सराहनीय है। समय पर महामारियों का उन्मूलन कर, न केवल हमने अपने देश की स्वास्थ्य सम्बंधित सुविधाओं को सुधारा, बल्कि कोरोना जैसी विपदा में भी अनेकों देशों का साथ देकर भारत ने अपने कर्तव्य समझकर निर्वाहन किया।

कैम्ब्रिज के इतिहासकार एंगस मैडिसन के अनुसार भारत की वैश्विक आय में हिस्सेदारी, जो की औपनिवेशिक शासन से पूर्व २२.६% थी, स्वतंत्रता का संघर्ष पूर्ण होने तक घटकर मात्र ३.८% रह गई। यह लिखते हुए हम अपने देश की योग्यता पर अपार गर्व अनुभव कर रहे हैं की, उन विकट परिस्थितियों के अँधियारे में कहीं ओझल हो जाने की अपेक्षा राष्ट्र के उज्ज्वल कल की ज्योत हृदय में धारण किए हम अड़ीग, अटल एंव कर्मशील रहे। और देशवासियों की कर्मनिष्ठा के परिणामस्वरूप, आज भारत एशिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बन चुका है। औपनिवेशिक शासन काल से अब तक भारत की अर्थव्यवस्था २.७ लाख करोड़ रुपयों से बढ़कर ३०१.७५ लाख करोड़ रुपये हो गई है।



देश का विदेशी मुद्रा भंडार भी ३०० बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक हो गया है, जो भारतीय सीमा-सुरक्षा में अर्थव्यवस्था की मदद करता है। इसी प्रकार दुनिया में आज भारत चार बड़ी सैन्य शक्तियों में से एक है और इसके पास विश्व की अत्याधुनिक मिसाइले भी शामिल हैं।

सड़कों, बंदरगाहों का निर्माण करवा कर एवं खाद्यान्न के उत्पादन में आत्मनिर्भर बन कर देश ने अर्थव्यवस्था को विकास के उच्च मार्ग पर लाने का कार्य किया है। आज भारत दालों का सबसे बड़ा उत्पादक और उपभोक्ता राष्ट्र बन चुका है। चीनी का यह दूसरा और कपास का तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक है। इसके अलावा हमारा देश दुनिया का सबसे बड़ा दूध और मक्खन उत्पादक भी है।

शुरुआती दौर में भारत अपनी कई ज़रूरतों के लिए आयात पर निर्भर था, पर काल दर काल भारत ने अपनी आत्मनिर्भरता सिद्ध की है। भारत ने सस्ती दरों पर वायरलेस टेलिफोन प्रदान किए, दुनिया का सबसे कम लागत वाला सुपरकंप्यूटर भी भारत

ने ही तैयार किया है। विश्व का सबसे बड़ा दुपहिया वाहनों का उत्पादक, भी भारत ही है। वर्ष २०१५ में सालाना २५-४० मिलियन यात्री श्रेणी में दिल्ली स्थित इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डे को सर्वश्रेष्ठ हवाईअड्डे का खिताब दिया था। यहाँ तक कि भारत की मिड –डे मील योजना दुनिया का सबसे बड़ा स्कूल भोजन कार्यक्रम है।

भारत ने जी20 की अपनी अध्यक्षता के दौरान भी यह प्रदर्शित किया कि वह बहुत कठिन समय में भी दुनिया को साझा हित के विषय पर सहमत करने का सामर्थ्य रखता है। भारत के संघर्ष और उसके उपरांत प्राप्त की गई उपलब्धियों को चन्द्र शब्दों में व्यक्त कर पाना संभव नहीं है। भारत आज विश्व के लिए प्रेरणा का श्रोत है। इस राष्ट्र के वर्षों के परिश्रम की कहानियों के अवशेष आज भी यहाँ की हर गली, संस्थान और हर भारतीय के दिल में बसते हैं। भारत की उपलब्धियां सिद्ध करती हैं की भारत अमर था, अमर है और अमर रहेगा।

-अदिति बिष्ट  
कृषि महाविद्यालय, तृतीय वर्ष



# भारत की परंपरागत अस्परधीय शिक्षा प्रणाली

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का समग्रतापूर्ण विकास करने में प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था के सन्तुलित एवं सुव्यवस्थित स्वरूप का अहम् योगदान है। इस शिक्षा पद्धति का उद्देश्य, मानव के व्यक्तित्व का सर्वांगीण एवं समग्र विकास करना है।

प्राचीन शिक्षा पद्धति में जीवन दर्शन एवं शिक्षा के मध्य एक संतुलन स्थापित है। भारतीय शिक्षा पद्धति का उल्लेख ना केवल संस्कृत साहित्य के ग्रंथों में है, अपितु संस्कृत इतर विद्वानों की लेखनी में भी इस विषय के महत्व को समझाते हुए कई कार्य किए गए हैं, उदाहरण के लिए, श्री कृष्ण कुमार जी की रचनाए, तथा डॉ सरयू प्रसाद चौबे द्वारा लिखित ‘भारतीय शिक्षा का इतिहास’, इनमें इस विषय को विस्तार से समझाने का प्रयास किया गया है।

भारतीय परम्परा में सोलह संस्कारों की परिकल्पना की गई है। सोलह संस्कारों में विद्यारम्भ संस्कार द्वारा ही विद्या ग्रहण प्रारंभ होता है, वास्तविक शिक्षा श्रद्धाचर्याश्रमश् में प्रविष्ट होने पर आरम्भ होती है। आद्य ऋषि-मुनियों ने मानव की आयु को १०० वर्ष मानते हुए चार आश्रमों में समग्र आयु का विभाजन किया, जिसमें प्रथम सोपान पर ब्रह्मचर्याश्रम की व्यवस्था की गई है।

ब्रह्मचर्य शब्द का अर्थ है- ज्ञान के मार्ग पर चलते हुए ब्रह्मज्ञान को प्राप्त करना। मानव के जीवन का उद्देश्य भोग विलास मात्र न मानकर शिक्षा के द्वारा ज्ञानार्जन करते हुए पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति करने के उद्देश्य से ‘आश्रम’ की आधारशीलता रखी गयी थी। ब्रह्मचर्याश्रम में प्रवेश ‘उपनयन’ संस्कार के उपरान्त होता था, जब शिष्य श्रद्धा एवं भक्ति भाव से ज्ञान प्राप्ति के निमित्त गुरु के समीप जाकर विनीत भाव से शिक्षा की याचना करता था एवं गुरु द्वारा शिष्य रूप में स्वीकार कर लेने पर ही शिक्षा का आरम्भ होता था।

**गुरुब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः  
गुरुः साक्षात्परब्रह्मा, तस्मै श्री गुरुवे नमः**

अर्थात्, गुरु विष्णु (संरक्षक) के समान है। गुरु प्रभु महेश्वर (विनाशक) के समान है। सच्चा गुरु, आँखों के समक्ष सर्वोच्च ब्रह्मा (रचेता) है, अपने उस एकमाल सच्चे गुरु को मैं नमन करता हूँ!

वेदों में गुरु का दर्जा भगवान समान माना गया है। गुरु की आज्ञा ही शिष्य का परमधर्म था। ब्रह्मार्चयश्रम के अनुसार ब्रह्माचारी बालक द्वारा गुरु की सेवा शुश्रुषा करते हुए अन्तःकरण को पवित्र कर ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाता था। शिष्यों को निष्ठापूर्वक गुरु द्वारा वेद, उपनिषद्, ब्राह्मण, आरण्यक इत्यादि चतुर्दश विधाएँ प्रदान की जाती थीं जिससे ब्रह्माचारी बालक के मस्तिष्क का विकास होता था।

प्राचीन काल में शिक्षा प्रधानतः, धार्मिक संस्कार रूप में प्रदान की जाती थी। उस समय विधिविधानपूर्वक प्रदान की गई शिक्षा ही सार्थक मानी जाती थी। गुरु ऐसे शिष्य को विद्या दान नहीं करते थे जिसके पास ज्ञान प्राप्ति का अर्थ न हो, या फिर शिष्य में शिक्षा के अनुरूप गुरु सेवा की भावना भी न हो। क्योंकि जिस प्रकार ऊसर में बीज बोने से बीज नष्ट हो जाता है, उसी प्रकार गुरु के प्रति श्रद्धा नहीं रखने वाले को विद्या देने से वह नष्ट हो जाती है।

परम्परागत शिक्षा व्यवस्था गुरु शिष्य के समधुर संबंधों पर आधारित थी, शिष्य द्वारा कोई गलती हो जाने की स्थिति में गुरु का शिष्य के प्रति उदारवादी हृष्टिकोण था, दण्ड विधान का उद्देश्य भूल सुधार करना तथा उसकी पुनरावृत्ति को रोकना माल था। गुरु के प्रति शिष्य के कर्तव्यों एवं व्यवहारों का निर्धारण तथा उनका अनुपालना करना प्राचीन काल में संस्कार के रूप में जीवन का अंगभूत था। इस पौराणिक शिक्षा प्रणाली के कारण ही आचार्य चाणक्य, समर्थ रामदास, आचार्य विश्वगुप्त और भगवान बुद्ध जैसे गुरुओं ने महान राजा चन्द्रगुप्त मौर्य, छत्रपति शिवाजी महाराज, चक्रवर्ती राजा चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य, और सम्राट अशोक जैसे अपराजेय शासकों का निर्माण किया।

इस शिक्षा व्यवस्था में वर्तमानकाल की तरह धन या शुल्क का भी प्रावधान नहीं था तथा शिक्षा का स्वरूप व्यवसायिक नहीं

था। शिष्य द्वारा प्रदान की गई दक्षिणा के लिए गुरु की स्वार्थ भावना निहित होती थी। प्राचीन शिक्षा व्यवस्था वर्तमान की अपेक्षा स्त्रियों के लिए भी उदार थी। उनकी शिक्षा के लिए उच्च स्तर की व्यवस्थाएँ की जाती थीं। स्त्रियाँ विदुषी थीं, और उनको भी पुरुषों की भाँति शिक्षा प्राप्त करने का पूर्ण अधिकार था।

हमारी परंपरागत शिक्षा प्रणाली का स्वरूप, समय के साथ बदलता गया। आज ज्ञान प्राप्त करने की असीमित संभावनाएँ विद्यमान हैं। बढ़ती जनसंख्या एवं संसाधनों की अधिकता ने शिक्षा संस्थानों की संख्या अवश्य बढ़ाई है, पर शिक्षा की गुणवत्ता नहीं। आधुनिकता के छड़ प्रदर्शन के कारण शिक्षा का स्वरूप विकृत होने लगा है। शिक्षण संस्थाओं में भी भारी शुल्क की दुर्व्यवस्था के कारण कमज़ोर आय वर्ग के छात्र-छात्राएँ योग्य होने पर भी शिक्षा से वंचित रह जाते हैं।

वर्तमान शिक्षा पद्धति में अच्छाईयों के साथ ही अनेक विसंगतियाँ भी हैं। जिनका समाधान हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति में नीहित है। वर्तमान में यदि प्राचीन शिक्षा पद्धति की रूपरेखा को आधुनिक अवश्यकताओं से मेल कराकर अपनाया जाए, तथा मौलिक नैतिक मूल्यों को पुनः समावेशित किया जाए तो शिक्षा की गरिमा पुनः प्रतिष्ठापित हो जाएगी और शिक्षा के नवीन स्वरूप का सूलपात हो जाएगा।

- खुशी बिष्ट

सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय, द्वितीय वर्ष

# संस्कृत नागरिकों का कोष बनाती भारतीय संस्कृति

जिस प्रकार किसी स्थान का भ्रमण करने के लिए मानचिल की आवश्यकता होती है, ठीक उसी प्रकार समाज में व्यवहार करने के लिए संस्कृति की आवश्यकता होती है। परन्तु संस्कृति स्थाई नहीं है, यह सदा परिवर्तित व विकसित होती रहती है, इसके तत्त्व जुड़ते-घटते रहते हैं, जिस कारण संस्कृतियाँ प्रकार्यात्मक इकाई के रूप में सदैव गतिशील हैं। संस्कृति धर्म, जाती, या लिंग से परिभाषित नहीं होती, ना ही यह लोगों में भेद करती है। यह तो लोगों को, संज्ञानात्मक रूप में व्यवहार, मानकीय रूप में आचरण तथा भौतिकीय रूप में संसाधनों का विश्लेषण कर, जीवन जीने का तरीका सिखाती है। मिच एल्बम की मशहूर किताब 'त्यूसडेज़ विथ मोर्रि', में संस्कृति के परिपेक्ष में कहा गया है की, हर व्यक्ति की अपनी संस्कृति होना आवश्यक है, और संस्कृति का समय और हालात के साथ विकास भी।

संस्कृति के मूल प्रत्येक व्यक्ति के लिए भिन्न हो सकते हैं, परन्तु उनके चरित्र निर्माण में प्रथम भागेदारी संस्कृति की ही होती है। यह कहा जा सकता है कि पहले संस्कृति एक संस्कृत व्यक्ति का निर्माण करती है, और फिर वही संस्कृत व्यक्ति अपनी संस्कृति का विकास करता है। एक संस्कृत व्यक्ति के हर भाव में उसकी संस्कृति अजर निवास करती है, तथा उसे दूसरों से भिन्न भी और समान भी बनाती है।

“पग पग पर जहाँ बोली बदले, बदले वेशभूषा, पकवानो की बात  
अलग है, त्वैहार भी न्यारा, ऐसा है भारत मेरा।”

राष्ट्र के रूप में हमारे देश का विकास केवल यहां के भू-भाग और किसी राजनैतिक सत्ता के अस्तित्व के कारण नहीं बल्कि पांच हजार साल से भी अधिक पुरानी हमारी संस्कृति एवं संस्कृत महापुरुषों के कारण हुआ है। विविधता में एकता के अखंडित स्वरूप का प्रमाण देते हुए भारतीय संस्कृति, १४०० बोलियों तथा औपचारिक रूप से मान्यता प्राप्त २२ भाषाओं, विविध धर्म, कला, संगीत, और नृत्य कि विभिन्न शैलयों के स्वरूप में सबसे बड़े प्रजातंत्र का प्रतिनिधित्व करती है। भारतीय संस्कृति विश्व की प्रधान संस्कृति है, यह कोई गर्वोक्ति नहीं, बल्कि वास्तविकता है। कई लोग इस बात के साक्षी हैं कि इस अनोखी संस्कृति ने विश्व को अपना घर माना है, और जग-कल्याण हेतु समय-समय पर योगदान भी दिया है। भारतवर्ष की भूमि से उत्पन्न, न जाने ही कितने संस्कृत व्यक्तियों ने एक बीज की भाँति हमारी भारतीय संस्कृति को विकसित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। जब हम स्मरण करते हैं तो स्वामी दयानंद



सरस्वती, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गांधी, रविंद्रनाथ टैगोर, आर्यभट्ट, जैसे कई महान् व्यक्तित्वों का चिल हमारे हृदय में उभरने लगता है। इन्होंने भाषा, साहित्य, धर्म, विज्ञान आदि के माध्यम से समाज में धार्मिक, दार्शनिक और साहित्यिक विचार को संवारा, एवं विश्व पटल पर अपने अस्तित्व कि कभी ना धूमिल होने वाली छाप छोड़ गए।

**“हिन्दू संस्कृति आध्यात्मिकता की अमर आधारशिला पर स्थित है।”**

—स्वामी विवेकानन्द

भारतीय संस्कृति के नायक कहे जाने वाले सर्वोच्च आध्यात्मिक गुरु और समाज सुधारक ‘स्वामी विवेकानन्द’ ने अपना पूरा जीवन ब्राह्मणवाद और धार्मिक कर्मकांड जैसी विसंगतियों को दूर कर संस्कृति की शुद्धि और विकास में समर्पित कर दिया था। भारतीय इतिहास के महान् साहित्यकार और हमारी संस्कृति को एवं सुप्रसिद्ध बनाने, रविंद्र नाथ टैगोर का भी कहना था कि - “यदि आप भारत को जानना चाहते हैं, तो विवेकानन्द का अध्ययन करें। उनमें, सब कुछ सकारात्मक है और कुछ भी नकारात्मक नहीं है।” टैगोर ने भी अपनी कविताओं, कहानियों, नाटकों एवं उपन्यासों के माध्यम से भारतीय संस्कृति, दर्शन एवं समाज के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला, जो आज भी लोगों को प्रेरित करते हैं। उन्हें भारतीय संस्कृति की सच्ची प्रेरणा भी माना गया।

हमारी संस्कृति केवल नृत्य, साहित्य, संगीत से परिभाषित नहीं है, यह तो राष्ट्रीय एकता का का एक मज़बूत साधन है। इसी में देश की विविधता की ताकत को पहचानते हुए एवं अनेकता में एकता के बीज अंकुरित करते हुए ही, गांधी जी ने आज़ादी के आंदोलन में इसी सांस्कृतिक जीवंतता को अहिंसा और नैतिक जीवन मूल्यों से जोड़ा। यही उनका वह सांस्कृतिक राष्ट्रवाद था जिसमें देश को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त कराने हेतु आंदोलनों का नेतृत्व करते हुए राष्ट्र को सांस्कृतिक दृष्टि से एक किया। इतिहास साक्षी है, कि हिंदुस्तान की प्रबलता सांस्कृतिक एकता में निहित रही है।

भारतीय इतिहास को महत्वपूर्ण बनाने वाले सभी महापुरुष, और भारत की आत्मा को जीवंत रखने वाला जटिल और आवश्यक मार्ग भी संस्कृति से ही होकर गुज़रता है।



इस बात में कोई संदेह नहीं है कि, भारतीय संस्कृति उन महान् संस्कृतियों में से एक है, जो आने वाले समय में विश्व का नेतृत्व करेंगी। और इन सभी गौरवांवित् उपलब्धियों का श्रेय, भारत के संस्कृत नगरीकों को जाता है। हमें ऐसे महापुरुषों के मूल आदर्शों को अपने जीवन में ढालने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए जिन्होंने हमारी भारतीय संस्कृति को विश्व- पटल पर उजागर कर सम्पूर्ण मानव प्रजाति का मार्गदर्शन किया।

-भूमिका कांडपाल

सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय, द्वितीय वर्ष



# साहित्य और स्वतंत्रता : अभिव्यक्ति से प्रबुद्धता तक

"साहित्य स्वतंत्रता की आत्मा है।"

- जॉर्ज ओरवेल

जॉर्ज ओरवेल का मानना था कि साहित्य, स्वतंत्रता में सर्वाधिक जन-भागीदारी का एक महत्वपूर्ण कारण है। उनके अनुसार, बिन साहित्य, प्रत्येक हृदय में सच्ची देशभक्ति को उजागर करना उतना ही कठिन है, जितना की बिन पानी अच्छी फसल की अपेक्षा करना। साहित्य मानवीय अनुभवों, भावनाओं और विचारों को व्यक्त करने का वह सशक्त माध्यम है, जो समाज को व्यापक रूप से प्रभावित करता है, तथा प्रबोधन की प्रक्रिया का सूखपात भी करता है। यही कारण है कि समाज के नवनिर्माण में हमेशा ही साहित्य ने एक केंद्रीय भूमिका निभाई है।

व्याख्या समय के उस कालखंड की है जब आज़ाद विचारों की अभिव्यक्ति साहस की डगर तो थी परन्तु दंड का मुख्य कारण भी, उस समय साहित्य ने स्वतंत्रता से जुड़े अहम पहलू, देश प्रेम की भावना, लोगों की पीड़ा, एवं अन्याय की अभिव्यक्ति कर, क्रांतिकारियों और राष्ट्र के बीच संचार माध्यम प्रदान किया। इन साहित्य रचनाकारों ने, न केवल जागरूकता का पथ प्रेक्षित किया, परन्तु समूचे विश्व को अपनी ओर आकर्षित भी किया। समय बदला, अभिव्यक्ति के रूप बदले, परन्तु उसके द्वारा प्रबुद्धता का उद्देश्य वही रहा।

जब 1686 में ईस्ट इंडिया कंपनी ने बंबई में अपना पहला प्रेस स्थापित किया और इस प्रेस द्वारा 1780 में पहला समाचार पत्र 'द बंगाल गजट' प्रकाशित हुआ, तो भारत के कई शिक्षित

जो हमेशा से ही अपनी मातृभूमि को अंग्रेजों की बेड़ियों से मुक्त कराना चाहते थे, उन्होंने प्रकाशन शुरू कर दिया। नाना साहेब पेशवा द्वारा 'पायाम-ए-आज़ादी' या स्वतंत्रता का संदेश (1857), जी. सुब्रमण्य अव्यर द्वारा 'द हिंदू' और 'स्वदेशमिलन', सुरेंद्रनाथ बनर्जी द्वारा 'द बंगाली', दादाभाई नौरोजी द्वारा 'वॉयस ऑफ इंडिया', 'केसरी' (मराठी में) और बालगंगाधर तिलक द्वारा 'मराठा' (अंग्रेजी में), आदि विख्यात रूप से प्रकाशित किए गए। प्रेस अपने प्रारंभिक दौर में मुख्य रूप से ब्रिटिश प्रशासन और उसके अधिकारियों के दुराचारों के खिलाफ एक स्पष्ट आलोचक थी। समाचारपत्रों का प्रभाव न केवल शहरों और गाँवों तक सीमित था, बल्कि ये समाचारपत्र दूरस्थ गाँवों तक पहुँचे, जहाँ प्रत्येक विषय और संपादकीय पर गहन चर्चा होती रही।

यहाँ अभी कलम ने सच्चाई की पहल उठाई ही थी कि, ब्रिटिश सरकार ने भयभीत होकर 'वर्णात्मक प्रेस अधिनियम' (द वर्नाकुलर एक्ट) पारित कर दिया, जिसका मुख्य उद्देश्य था भारतीय अखबारों को नियंत्रित करना और उनकी स्वतंत्रता को प्रतिबंधित करना। यह अधिनियम 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद ही रद्द किया जा सका। अब भारतीय क्रान्तिकारीयों को हुकूमत के खिलाफ एक



असरदार हथियार मिल चुका था। इस अधिनियम के खिलाफ विरोध के रूप में, भारतीय पत्रकारों और साहित्यिकों ने साहित्यिक पत्रिकाओं, समाचारपत्रों, और भारतीय समाज को जागरूक करने के लिए अपने प्रकाशनों के माध्यम से विरोध प्रकट किया। इसमें विशेष रूप से रवींद्रनाथ टैगोर, बड़ी ब्राह्मण, बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय, और महात्मा गांधी, जैसी कई हस्तियों का योगदान रहा। उन्होंने इस अधिनियम के खिलाफ अपनी लेखनी और उपन्यासों के माध्यम से विरोध किया और जनता को इसके खतरों के बारे में जागरूक किया।

इस अधिनियम के खिलाफ कई साहित्यिक पत्रिकाएं भी शुरू की गईं, जैसे कि 'हितवादिनी', 'भारत मिल', और 'अमृतबाजार पत्रिका', जो ब्रिटिश सरकार के नीतियों के खिलाफ साहित्यिक और सामाजिक सुधार की आवाज़ उठाती थीं। वह 'टाइम्स ऑफ़ इंडिया', 'हिन्दुस्तान टाइम्स', 'द इंडियन एक्सप्रेस', 'द लीडर', व 'अमृतबाजार पत्रिका' जैसे अखबार और पत्रिकाएँ थीं जिसने, 1919 में 'जलियांवाला बाग हत्या कांड' जैसे क्रूर नरसंहार का उल्लेख कर लोगों को अंग्रेजी हुकूमत में भारत की दयनीय स्थिथि से प्रभुत्व करवाया। परिणाम स्वरूप लोगों में आक्रोश भरा, राष्ट्र के प्रति अपनी ज़िम्मेदारियों का बोध हुआ, एवं स्वतंत्र पत्रकारिता के महत्व की भी स्पष्टि हुई।

यूँ तो भारत प्राचीन काल से ही अपने काव्य और साहित्य के लिए प्रसिद्ध रहा है। 'हरिषेण', 'बाणभट्ट', 'कालिदास' जी कि कृतियाँ हमेशा से ही प्रख्यात रहीं, परन्तु स्वतंत्रता संग्राम के साहित्यिकारों ने तो राष्ट्र कि

काया ही बदल दी। अब प्रेमचंद की रंगभूमि, कर्मभूमि (उपन्यास) हो, या भारतेंदु हरिश्चंद्र का भारत-दर्शन (नाटक), या जयशंकर प्रसाद का चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त (नाटक), या फिर वीर सावरकर का '1857 का प्रथम स्वाधीनता संग्राम' -जिसने भी इन्हें पढ़ा, उसे घर-परिवार की चिंता छोड़, देश के खातिर अपना सर्वस्व अर्पण करने के लिए स्वतंत्रता के महासमर में कूदते देर नहीं लगी।

लेखक, कवि और कहानीकार अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज की समस्याओं, समाजिक विभाजनों और अन्य महत्वपूर्ण मुद्दों पर प्रकाश डालते हैं। हमारे समाज में जबरन विभाजन, जाति और लिंग के खिलाफ उठी समस्याओं पर साहित्यिक रचनाएँ विचारशीलता, संवेदनशीलता और परिवर्तन की प्रेरणा प्रदान करती है। इसके साथ ही, साहित्य के माध्यम से लोगों को आपसी सम्बन्धों की महत्वपूर्णता, मानवीय सम्बन्धों की सम्प्रेषण और समाजिक संकटों के प्रतिकार का मार्ग समझाने का भी अवसर मिलता है। शायद इसलिए प्रेमचंद ने अपनी भावना स्पष्ट करते हुए कहा था,

**"साहित्य मेरे जीवन का आधार है, साहित्य मेरी सोच का आयन है।"**

साहित्य और काव्य लोगों को विचार करने और विश्लेषण करने की क्षमता प्रदान करते हैं। अर्थात् सच्चाई और खुले विचारों की अभिव्यक्ति ही स्वतंत्रता की सही परिभाषा है। इन शब्दों कि स्वतंत्रता ने ही कई देशों के इतिहास लिखे, आम लोगों की भावनाओं को अभिव्यक्त कर आपस में जोड़ा। साहित्य एक ऐसी शक्ति है, जिसका सही इस्तेमाल कर उत्थान का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है, और किया जाना चाहिए।

- साज़िया अब्दुल गफ़्फ़ार  
सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय, द्वितीय वर्ष

# अंतर्मन की कलम से



## भारत : सम्पूर्ण विश्व का भविष्य

सदियों से जिसको रौंदा गया तलवार और बंदूकों से,  
बड़ियों को तोड़, वह पुनर्जीवित हुआ है इस नए युग में।

विज्ञान, प्रौद्योगिकी और प्रगति में भारतीय आज प्रख्यात हैं,  
कूटनीति, प्रजातंत्र और निष्पक्षता में अव्वल भारत का स्थान है।

विश्व माल एक श्रोता है और भारत प्रवक्ता आगामी कल का,  
प्रतीक बन चुका है अब समृद्धि, विविधता और सामंजस्य का।

तुम कौरव हो तो पांडव है भारत, सुदामा हो तो श्रीकृष्ण भी,  
रण में उतरे तो अर्जुन भी है और रणनीति हो तो चाणक्य भी।

विश्व उत्थान का स्रोत और जगत का कल दोनों भारत ही है,  
भविष्य जो देखा है जग ने, उसका रचयिता मात्र भारत ही है।

-जाग्रत जोशी  
कृषि महाविद्यालय, तृतीय वर्ष

## संगीत : एक परिभाषा

शब्दों और सुरों का संगम है संगीत  
भाषा के दायरों से स्वतंत्र है संगीत  
तानसेन को जब अकबर ने कहा किसमे उम्र लगायी  
दीपक राग पर सुर लगा उन्होंने महल में लपटे जगाई  
देख परिस्थिति विषम होते फिर सुरों को उठाया  
इस बार मल्हार राग से वर्षा को बुलाया  
संगीत ही तो है जो दूर है मतभेद से  
देखे सबको एक सामान अपने मकान की बारी से  
मैंने देखा है खुदको भजन सुनकर बिखरते हुए  
हाँ मैंने देखा है संगीत को मुझमे बस्ते हुए  
शायद जब शब्द न रहे तो संगीत ही आशा है  
और शायद यही संगीत की परिभाषा है

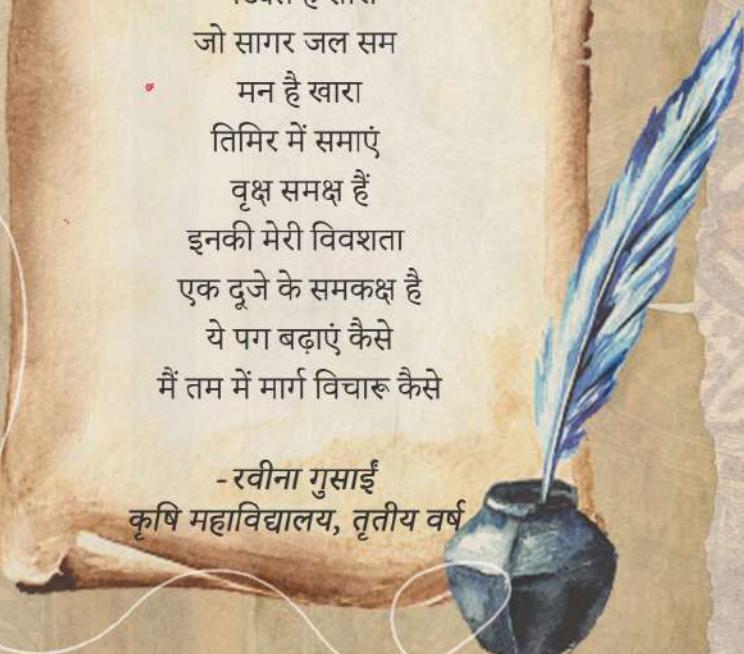
- प्रेक्षा रावत  
प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, द्वितीय वर्ष



## अंतर्द्वंद्व

रात्रि रचित  
षड्यंत्र है सारा  
जो सागर जल सम  
मन है खारा  
तिमिर में समाएं  
वृक्ष समक्ष हैं  
इनकी मेरी विवशता  
एक दूजे के समकक्ष है  
ये पग बढ़ाएं कैसे  
मैं तम में मार्ग विचारू कैसे

- रवीना गुसाई  
कृषि महाविद्यालय, तृतीय वर्ष



# भारतीय ग्रामों में सुरक्षित सांस्कृतिक विरासत : आत्मनिर्भरता का पथ



22



महात्मा गांधी जी का यह कथन "भारत की आत्मा उसके गाँवों में बसती है" आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना कि पहले था। गाँवों में भारत की समृद्ध संस्कृति, विरासत और जीवनशैली का सार निहित है। 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में 6 लाख से अधिक गाँव हैं जो माँ भारती को सुशोभित करते हैं। यहाँ की मिट्टी, जीवनशैली, कला, सांस्कृतिक विरासत, ये सब मिलकर एक अनूठा परिवृश्य तैयार करते हैं। यहाँ के लोकगीत, लोककथाएँ, लोकनृत्य, हस्तशिल्प, कलाकारी, ये सब भारत की समृद्ध विरासत का अनूठा हिस्सा है। भारतीय गाँव केवल भौगोलिक क्षेत्र नहीं, बल्कि ये गाथा है, प्रेमचंद की कहानियों की, गाथा है प्रदेशों की बोलियों की, गाथा है लोगों की जीवनशैली की और गाथा है वर्षों के विकास की और अनुभूति है लम्बे कालखंड की प्रतारणा की। पराधीन भारत ने अपने विकास की यात्रा में अनगिनत संघर्षों का सामना किया है।

अंग्रेजों द्वारा भारत माँ को आतंरिक रूप से खोखला कर दिया था परन्तु हम सभी भारतवासियों ने अपनी शक्ति और संकल्प के साथ सभी चुनौतियों का सामना किया। और 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद, भारत एक नया अध्याय लिखने के लिए तैयार था। अब भारत माँ विकास के नए पैमाने लिखने चली थी और इस कार्य में अहम भूमिका निभाई है सांस्कृतिक विरासत के कुंड भारतीय ग्रामों ने,



जिसका परिणाम यह है की आज भारत एक 'नया' भारत है - आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी, और दुनिया के सामने एक प्रेरणा स्रोत जो निरंतर सतत प्रगति की और कदम बड़ा रहा है। नए भारत की याता चुनौतियों और उपलब्धियों से भरी रही है। स्वतंत्रता के पश्चात जो भारत कभी बेगिंग बाउल के रूप में जाना जाता था और जो भोजन की अत्यंत कमी से जूझ रहा था। गौरवान्वित होने का विषय है कि आज वही भारत न केवल अपनी खाद्य आवश्यकताओं को परिपूर्ण कर रहा है, बल्कि दुनिया के सबसे बड़े खाद्य निर्यातकों में से एक है।

यह परिवर्तन की शुरुवात हरित क्रांति से हुई और आज डिजिटल क्रांति तक चली। हरित क्रांति ने उच्च उपज देने वाली किसी के बीजों, रासायनिक उर्वरकों और सिंचाई सुविधाएं दी तो डिजिटल क्रांति ने किसानों को बाजार से जोड़ने, कृषि सूचनाओं तक पहुंच प्रदान करने और कृषि प्रक्रियाओं को डिजिटल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

यही गाँव आधार है की आज भारत आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर है। 'आत्मनिर्भरता' आगाज नहीं, एक अविराम प्रक्रिया है जो कि ग्रामीण भारत के मूल में स्थित है। गाँव-देहातों में घरों की दीवारों पर बनने वाली सुंदर कलाकृतियाँ, बिहार में मधुबनी, तो उत्तराखण्ड के कुमाऊं क्षेत्र में एपण,

तो राजस्थान के अलंकरण, और महाराष्ट्र में वरली का रूप ले लेती हैं। सांस्कृतिक पूँजी की द्योतक ये कलाकृतियाँ देश ही नहीं, अपितु पूरे विश्व को अपने रंगों से भरने की क्षमता रखती हैं। साहित्य, कला, संगीत, भाषाएँ, परंपराएँ - ये सभी भारत की सांस्कृतिक विरासत का अमूल्य हिस्सा हैं। हिंदी साहित्य की बात की जाये तो आदिकाल से आधुनिक काल तक साहित्य में गाँव नहीं, बल्कि हर गाँव में साहित्य बसता है। यह विरासत केवल अतीत की यादें नहीं है, बल्कि यह आत्मनिर्भर भारत के निर्माण का अभिन्न आधार भी है।

**ग्रामोऽपि भारतस्य गौरवम्, सांस्कृतिक विरासतं तेषां धर्मम् ।  
विविधतापूर्णं जीवनं तेषां, सर्वे मिलिंद्यं सुखं वसन्तु ।**

अर्थात् भारत के हर गाँव का गौरव उनकी सांस्कृतिक धरोहर और धर्म है। उनका जीवन विविधतापूर्ण अनुभवों से भरा हुआ है, जिससे सभी मिलकर खुशी से रहते हैं।

भारत के गाँव सिर्फ खेत-खलिहान और मिट्टी के घर ही नहीं हैं, बल्कि ज्ञान का भी अथाह भंडार हैं। सदियों से चली आ रही परंपराओं में अनेक ऐसी विधियाँ छुपी हैं जो आज विश्व के लिए प्रेरणा बन रही हैं। हमारे किसानों द्वारा पीढ़ियों से अपनाई गई फसल चक्र की पद्धति आज आधुनिक खेती को टिकाऊ बनाने में मदद कर रही है। इसी तरह, गाँवों में इस्तेमाल की जाने वाली बावड़ी नामक जल संरक्षण प्रणाली, विश्व भर के वास्तुविदों को जल संग्रहण बनाने की प्रेरणा दे रही है। प्राकृतिक औषधियों के क्षेत्र में भी भारतीय गाँवों का ज्ञान अद्वितीय रहा है। भारतीय गाँवों में बसने वाले आदिवासी समुदाय सदियों से नीम की पत्तियों का उपयोग विभिन्न बीमारियों के इलाज में करते आए हैं, और हाल ही के शोध ने इसके जीवाणु नाशक और सूजन कम करने वाले गुणों की पुष्टि की है। ये तो बस संक्षिप्त कुछ उदाहरण हैं। परन्तु भारत की ग्रामीण संस्कृति तो स्थाई जीवनशैली, प्राकृतिक चिकित्सा और पारंपरिक कला रूपों जैसे विभिन्न क्षेत्रों में ज्ञान का खजाना है।

- पल्लवी शर्मा  
कृषि महाविद्यालय, तृतीय वर्ष

# 1990-2024 : विकास के पथ पर स्वतंत्र भारत



## "स्वतंत्र भारत का प्रगति पथ"

स्वतंत्र भारत का प्रगति पथ एक सामर्थ्य वर्धक और समृद्ध भविष्य का दिशानिर्देश करता है, जो सभी भारतीयों के लिए गर्व का विषय है। स्वतंत्र भारत ने अपनी स्वतंत्रता के बाद से एक गौरवशाली और उत्थानशील यात्रा तय की है। इस प्रगति पथ पर भारत ने विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्टता की ओर अग्रसर होने का प्रयास किया है, जैसे विज्ञान, अनुसंधान, तकनीकी उन्नति, शिक्षा, स्वास्थ्य, और आर्थिक विकास।

स्वतंत्र भारत का प्रगति पथ विविधता, समृद्धि और सशक्त समावेशी विकास की ओर बढ़ रहा है। भारत ने स्वयं को एक विश्वस्तरीय शक्ति के रूप में पुनर्गठित करने और आगे बढ़ने के लिए प्रतिबद्ध किया है। इस प्रक्रिया में, स्वतंत्र भारत अपने नागरिकों को समृद्धि, स्वतंत्रता और न्याय के साथ जीवन व्यतीत करने का अवसर प्रदान करता है।

आजादी के पश्चात, अंग्रेजों के द्वारा माँ भारती की आत्मा को पूर्णतया क्षीण-क्षीण कर देने पर भारत भूमि का ढांचा जर्जर हो चुका था। शिक्षा प्रणाली अविकसित थी, भारत ने अनेक चुनौतियों का सामना किया। १९९० से २०२४ तक का समय भी इसी चुनौती भरे सफर का अहम हिस्सा रहा। इन ३४ वर्षों में, भारत ने अपनी अद्वितीय पहचान बनाई अनेक जगहों में उन्नति की और विभिन्न क्षेत्रों में विकास के पथ को निरंतर बढ़ावा दिया है। अतः कहा गया है कि

**"स्वतंत्र भारतस्य विकासाय संकल्पः समर्पितः।"**

अर्थात् स्वतंत्र भारत के विकास के लिए हमारा संकल्प अथक है और हमें समर्पित है। भारत का विकास, सफलता की एक अद्वितीय और अभूतपूर्व कहानी है। १९९१ से २०२४ तक भारतीय भूमि ने कई उतार-चढ़ाव देखे। १९९१ में, उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण नीतियां लागू की गईं, जिसने देश की अर्थव्यवस्था को बदल दिया। १९९८ में, भारत ने पोखरण में परमाणु परीक्षण किए, जिसके बाद उसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिबंधों का सामना करना पड़ा।

२००४ में, भारत ने पहली बार मंगल ग्रह पर मिशन भेजा, जो एक ऐतिहासिक उपलब्धि थी। २००८ में, भारत ने चंद्रमा पर मिशन भेजा और चंद्रमा पर भारतीय ध्वज फहराया।

२०१६ में, भारत ने जीएसटी (वस्तु एवं सेवा कर) लागू किया, जो एक महत्वपूर्ण कर सुधार था। २०१९ में, भारत ने चंद्रयान २ मिशन असफल होने के बाद, ISRO ने हार नहीं मानी और २०२३ में फिर से मिशन लांच कर चन्द्रमा पर सॉफ्ट लैंडिंग करने वाला चौथा देश बन गया। २०२३ में, भारत ने 5G स्पेक्ट्रम की नीलामी की, जो 5G सेवाओं की शुरुआत का मार्ग प्रशस्त करेगा।

२०२४ में अयोध्या में राम मंदिर निर्माण हुआ जो भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के पुनर्जागरण का प्रतीक है। यह भारत को एक मजबूत, समृद्ध और आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

उदारीकरण, निजीकरण, सशक्तीकरण और वैश्वीकरण जैसी नीतियों ने देश की अर्थव्यवस्था को बदल दिया। इन नीतियों ने विदेशी निवेश और व्यापार को बढ़ावा दिया, जिससे आर्थिक विकास में तेज़ी आई। इस अवधि में भारत ने उल्लेखनीय प्रगति दर्ज की है। उदाहरण के लिए, सकल घरेलु उत्पाद (जीडीपी) में लगभग १३गुणा वृद्धि हुई है, जो १९९० में २६६ बिलियन से बढ़कर २०२३ में ३१५ ट्रिलियन हो गया है। इसी तरह गरीबी दर में भी गिरावट आई, जो १९९० में ४५% से घटकर २०२३ में १५% हो गयी है। शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण प्रगति हुई है, जिसमें नामांकन दर १९९० में ५२% से बढ़कर २०२३ में ७५% हो गया है। भारत, जो कभी एक बहुत ही धीमी गति से विकास करता देश माना जाता था, आज विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से एक बनकर उभरा है, और विश्व की ५ वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है।

आर्थिक परिदृश्य २०१६ की रिपोर्ट के अनुसार, संयुक्त राज्य अमेरिका और भारत आज मजबूती के दो स्तंभ हैं जो डगमगाती वैश्विक अर्थव्यवस्था को सहारा दे रहे हैं। एक समय जहाँ भारत को देश की दृष्टि से देखा जाता था, वहाँ आज यह विकासशील देशों के लिए एक प्रेरणा स्रोत बन गया है।

भारत के विकास की कहानी एक प्रेरणास्पद उदाहरण है, जो देश की अनगिनत संभावनाओं को दर्शाती है। भारत का विकास केवल अर्थव्यवस्था तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक और मानविकी उत्थान की कहानी है। स्वतंत्र भारत के विकास के इस उत्कृष्ट पथ पर चलते हुए, हमें यह याद रखना चाहिए कि हमारा भविष्य हमारे अद्वितीय प्रयासों और उत्कृष्टता के साथ ही निर्मित होगा।

अन्त में यही कहा जा सकता है कि देश ने हर दिशा में विकास किया है। विश्व में भारत की विश्वसनीयता बढ़ी है, किन्तु अभी मंजिल दूर है।

भारतवासियों की लगन और अथक प्रयासों से यह सुनिश्चित होता है कि चाहे राह कितनी भी कठिन क्यों न हो, हम अपने लक्ष्य की ओर निरंतर अग्रसर हैं। हम जानते हैं कि संघर्षों से भरी यह यात्रा कभी कभी कठिनाइयों से भरी हो सकती है, लेकिन हमारा पूर्ण विश्वास है कि एक दिन भारत का परचम पूरे विश्व में उच्चतम लहराएगा।

- प्रज्ञा जैन  
प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, द्वितीय वर्ष

## अमृतकाल का गठन पौराणिक वेदत्व के संग

यस्मिन्तिष्ठात्वायैवषट् ॥ नित्यः सर्वगत  
स्थाप्ति तिकवचाय ह्रङ् ॥ पश्चेष्मेषार्थ  
श्रुण एतीति नेत्रं तथायैवाषट् ॥ नानोवि।  
पाति तिव्यानीत्यस्त्रापषट् ॥ श्रीकृष्ण  
पीतर्थेष्मादेविनियोगः ॥ इति त्यासः  
ब्रह्मणाम् ॥ पाषाण्यश्रतिबोधि ।

चलता चलाता कालचक्र,  
अमृतकाल का भालचक्र,  
सबके सपने, अपने सपने, पनपे सपने सारे,  
धीर चले, वीर चले, चले युवा हमारे,  
नीति सही रीती नई, गति सही राह नई,  
चुनो चुनौती सीना तान,  
जग में बढ़ाओ देश का नाम ।

- नरेन्द्र मोदी

पुराणों में कहा गया है कि गहन तपस्या, ध्यान और ज्ञान के बाद संसार में सप्तऋषियों की उत्पत्ति हुई, जिन्होंने वैदिक समाज का प्रभावशाली आध्यात्मिक प्रतिनिधित्व किया। विभिन्न क्षेत्रों में अपने ज्ञान का सही इस्तेमाल कर इन्होंने जनकल्याण हेतु स्वयं को समर्पित कर दिया, तथा संसार में संतुलन बनाए रखा। शायद इसलिए, भारत का वह युग ही अमृतकाल कहलाया। समान ज्ञान धारणा के साथ ही अमृतकाल के पुनर्जागरण हेतु, २०२४ बजट की ७ प्राथमिकताएं को सप्तऋषि कहकर संबोधित किया गया, ये सप्तऋषि हैं- समावेशी विकास, अंतिम छोर तक पहुंचना, बुनियादी ढांचा और निवेश, क्षमता को उजागर करना, ग्रीन ग्रोथ, युवा शक्ति और वित्तीय क्षेत्र।

भारत, एक ऐतिहासिक रूप से समृद्ध देश है, जो हमेशा से अपनी विविधता, विचारशीलता, संस्कृति, और ऐतिहासिक धरोहर के लिए पुरे विश्व में प्रसिद्ध है। आज भारत नए अमृतकाल की ओर अग्रसर है। अमृतकाल अर्थात् “अमरत्व का काल”, यह भारत के इतिहास का एक ऐसा कालखंड है, जिसमें देश विकास का एक नया युग शुरू करने जा रहा है। एक ऐसा भारत जहाँ हर नागरिक खुशहाल, स्वस्थ

और सशक्त हो। एक ऐसा भारत जहाँ शिक्षा, स्वास्थ्य, और रोजगार सभी के लिए सुलभ हो। एक ऐसा भारत जो वैज्ञानिक और तकनीकी क्षेत्र में विश्व में अग्रणी हो। एक ऐसा भारत जो आध्यात्मिकता और ज्ञान का केंद्र हो। अमृतकाल का यह "विज्ञन 2047" भारत की स्वतंत्रता की 100वीं वर्षगांठ पर परिपूर्ण होगा।

अमृतकाल का आगमन भारत के पुनर्जीवन के एक नए अध्याय का आरंभ है। यह युग है विकास का, शांति का, समृद्धि का, यह युग है वेदत्व के ज्ञान का। वेदत्व जो की भारत के प्राचीनतम ग्रंथ हैं, जो भारतीय संस्कृति का आधार है और जिनमें ज्ञान और शिक्षा का अथाह भंडार समाहित है। इनमें हमारे ऋषि-मुनियों की गहन विचारधारणा, जीवन के सत्यों का अन्वेषण, और सामाजिक व्यवस्था का विकास है। वेदों के अनुसार भारत में सभी प्रकार की प्राकृतिक संप्रदाएँ मौजूद हैं, और भारत को अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किसी अन्य देश पर निर्भर नहीं रहना चाहिये। इस कथन को सत्य सिद्ध करते हुए भारत ने भूगोल, विज्ञान, भूवैज्ञानिक, और राजनीतिक दृष्टिकोण से समूचे विश्व में अपनी उपस्थिति को मजबूत किया है। भारत वो ज्ञानगगन है जिसने धरती से लेकर चाँद तक, लोहे से लेकर लाल्ख गढ़ना तक या फिर ऋषियों के मंत्रों से लेकर वैज्ञानिकों के अविष्कारों तक – अनेक अनमोल रत्न विश्व को भेट किये हैं। 'मेक इन इंडिया', 'आत्मनिर्भर भारत', और 'स्टार्टअप इंडिया' जैसी पहलों ने भारत को वैश्विक स्तर पर एक महत्वपूर्ण नेतृत्व बना दिया है।

भारतीय समाज ने आपसी सामरिकता का उदाहरण प्रदान किया और विश्व समुदाय को एक साथ मिलकर संघर्ष में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। बात की जाए कोविड-19 महामारी के समय, भारत ने विश्व के सामूहिक सेवानिवृत्ति में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिखाया है। भारत ने अपनी आत्मनिर्भर क्षमता को बढ़ाते हुए वैश्विक समुदाय को वैक्सीन, चिकित्सा उपकरण, और आवश्यक सामग्री में मदद प्रदान की। भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई वैक्सीन ने दुनियाभर में स्वास्थ्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विज्ञान एवं नवाचार के क्षेत्र में देखा जाए तो चंद्रयान 3 मिशन को पूरा करने के साथ साथ भारत ने चन्द्रमा की सतह के बारे में अधिक से अधिक जानकारी इकट्ठा करी जैसे- चन्द्रमा की सतह पर पानी की खोज, चन्द्रमा के तापमान और हवा मंडल का अध्ययन इत्यादि।

शिक्षा एवं विज्ञान के क्षेत्र में भी भारत ने कई महत्वपूर्ण पहल की है, जैसे की राष्ट्रीय शिक्षा निति 2020। यह निति शिक्षा को अधिक समावेशी, गुणवत्तापूर्ण और प्रासंगिक बनाने का प्रयास करती है। इनमें ही नहीं, प्रधानमंत्री द्वारा विश्व की पहली वैदिक घड़ी, 'विक्रमादित्य वैदिक घड़ी' का उज्जैन में लोकार्पण किया गया। यह घड़ी न केवल एक प्राचीन और अनुपम विज्ञान का प्रतीक है बल्कि भारतीय समाज के विकास की अमूल्य मूरत है।

गौरवान्वित होने का विषय है की 2024 में भारत ने यूनाइटेड किंगडम को पछाड़कर विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने जा रहा है। यह उपलब्धि अर्थिक विकास और वैश्विक व्यापार में भारत की बढ़ती भागीदारी का प्रमाण है। भारत का लक्ष्य 2029 तक तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाना है जो की 6-6.5% की वार्षिक वृद्धि दर को बनाये रखने पर ही प्राप्त किया जा सकता है। युवा शक्ति 'एजेंट ऑफ चेंज' भी है और 'बेनिफिशियरी ऑफ चेंज'(बदलाव का कारक और बदलाव का लाभार्थी) भी है। युवा शक्ति विकसित भारत की नीव है।

अमृतकाल नवभारत की नीव रखने में भारत की रीड़ की हड्डी की तरह साबित होगा। यह यात्रा हमारे पुरातन वेदत्व से प्रसंग लेकर, वर्तमान समस्याओं को सुलझाते हुए आगे बढ़ रहा है। यह यात्रा सिर्फ आर्थिक विकास के बारे में ही नहीं बल्कि समाज के सभी वर्गों में, सभी क्षेत्रों के कल्याण और सशक्तिकरण के बारे में भी है। भारत भूमि फिर से विश्वगुरु बनने की राह पर अग्रसर है जहाँ हर नागरिक खुशहाल, स्वस्थ और सशक्त होगा।

-निहारिका देवडी  
प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, तृतीय वर्ष



# नवाचारों से समृद्धि: भारत का स्वाभिमानपूर्ण रूप

“नवाचारों का समर्पण, समृद्धि की उड़ान,  
नव भारत का स्वरूप, भारत का स्वाभिमान”

भारत देश विविधतापूर्ण संस्कृति और समृद्ध इतिहास वाला देश है, जहाँ सदियों से नवाचारों की अविरल धारा प्रभावित हो रही है। एक ऐसा देश, जिसने शून्य से लेकर अंतरिक्ष तक, हर क्षेत्र में सदियों से दुनिया को अपने अद्वितीय विचारों और अविष्कारों से आश्वर्यचकित किया है। महान विचारक चाणक्य का मानना था कि राष्ट्र की समृद्धि, परिस्थितियों के अनुसार लगातार नवीनीकरण और अनुकूलन करने की क्षमता पर निर्भर करती है।

नवाचार, जिसे अंग्रेजी में "इनोवेशन" कहा जाता है, का अर्थ है नए और अनोखे उत्पादों, सेवाओं, या प्रक्रियाओं का निर्माण। यह एक ऐसी गतिविधि है जो हमें मौजूदा समस्याओं को बेहतर तरीके से हल करने और मानव जीवन को बेहतर बनाने में मदद करती है। नवाचार किसी भी राष्ट्र की प्रगति का मूल है, जो आर्थिक विकास को गति देता है, रोजगार के अवसर प्रदान करता है, और जीवन स्तर को उन्नति देता है।

“जहाँ चाह वहाँ राह” इस विचार को ध्यान में रखते हुए भारत ने दुनिया को न सिर्फ सही रास्ता दिखाया है बल्कि दुनिया के लिए प्रगति का पथ प्रदर्शित किया है। “जहाँ चाह वहाँ राह” के तत्व के साथ, भारत ने न केवल सही दिशा दिखाई दी है, बल्कि दुनिया के लिए प्रगति की मार्गदर्शिका प्रस्तुत की है।

चाहे प्राचीन काल की बात की जाये या आधुनिक युग की, भारत ने विश्व को अपने अविष्कारों से चकित किया है। भारत का युवा आदिकाल से ही झून्झूरू, जुगाड़ और प्रगति की भावना से ओतप्रोत रहा है। सीमित संसाधनों का उपयोग करके चतुराईपूर्ण और अनूठा समाधान ढूँढ़ने की भारतीय

जीवनशैली जुगाड़ कहलाती है जो कि नवाचार की भावना का एक अद्भुत प्रतीक है। हमारे देश के हर कोने, हर गली, हर गाँव में कुछ न कुछ नया और अनोखा नवाचार बसता है, जो हमें सिखाता है कि कैसे हम अपने संसाधनों को बेहतर रूप में उपयोग कर सकते हैं।

हमारे देश की नवाचारिकता की यात्रा प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक अत्यंत फलीभूत रही है। भारत जो अनंतकाल से ही विश्वगुरु कहलाया है उसने सदैव स्वयं को ही नहीं अपितु समूचे विश्व में ज्ञान की धारा प्रवाहित की है। सदैव से ही उत्कृष्ट में उत्कर्षतम भारत अब एक गहरे स्टार्टअप और तकनीकी क्षेत्र का केंद्र बन चूका है। भारत के युवा तकनिकी समस्याओं का समाधान करने के लिए अद्वितीय और समीक्षात्मक उपाय प्रस्तुत करते हैं। हमने अपनी संवेदनशीलता, धैर्य और निरंतर प्रयास के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में अद्वितीय नए उत्पादों और सेवाओं का निर्माण किया है। भारत में एक व्यापक पारिस्थितिकी विकास के साथ साथ नवाचारी और स्वार्थहीन वातावरण है, जो नवाचारों को प्रेरित करता है।

भारत भूमि विश्व की एक ऐसी भूमि है जिसकी जड़े नवाचार और समृद्धि की समृद्ध परंपरा से सिंचित रही है। चाहे बात की जाये प्राचीन काल के सिल्क रूट की या आधुनिक युग में सबसे सस्ते और सबसे अधिक डाटा उपयोग की, भारत ने हमेशा से ही समूचे विश्व को अपनी विविद्धता और समृद्धि से प्रभावित किया है। अपनी भूमि, मानव संसाधन और घटकों पर एक विशेष नजर रखते हुए, भारत उपयोगकर्ताओं, विद्यार्थियों, वैज्ञानिकों और अन्य उद्यमियों को उनके विशेष कुशलताओं और शक्तियों को पहचानने और उनका उपयोग करने की राह दर्शाता है। इससे न सिर्फ भारत को वैश्विक पटल पर एकिजट पॉइंट के रूप में पहचान मिली है, बल्कि इससे बेहतरीन संचार और सहयोग के जरिए राष्ट्रों के बीच अधिक संबंध बनाने में मदद मिलती है।

वैज्ञानिक सोच, नवाचारों और कुशलता के द्वारा, भारत कुछ ऐसी तकनीकों का निर्माण कर रहा है जो प्रकृति के संरक्षण विकास से संबंधित समस्याओं को समाधान देने में सक्षम हैं। इस प्रयास के साथ, भारत में "प्रदुषण रहित संपदा" और "स्वच्छ पानी" की तकनीक का निर्माण का सुझाव दिया गया है, साथ ही, भारत अपने मेगासिटी और उद्योग प्रदर्शनी के लिए प्रसिद्ध है, जहां उत्पादन, अर्थव्यवस्था, तकनीक और विकास की एक विस्तृत झलक होती है।

भारत अपने स्वाभिमान को बनाये रखने के लिए नवाचारों का उपयोग करता रहा है। संचार कौशल में रिलायंस की क्रांति, कृषि में महिंद्रा-टाटा की ताकत, और कौशल के क्षेत्र में वेदान्तु, ड्रीम११ की सफलता, भारत को आधुनिकता के शिखर पर ले जा रही है। इस तरह से, नवाचारों के साथ समृद्ध होते हुए वर्तमान स्थिति में भारत एक मुख्य धार्मिक, बौद्धिक और वाणिज्यिक केंद्र बन रहा है। नवाचार भारत की प्रगति का इंजन है, और यह भारत की समृद्धि का अभूतपूर्व आधार है। भारत की यह नवाचार पूर्ण यात्रा निरंतर जारी है, और यह निश्चित है कि आने वाले वर्षों में भारत भूमि विश्व को अपने अद्भुत तथा अपरिहार्य नवाचारों तथा आविष्कारों से आश्र्यचकित करेगी।

- हर्षित दुर्गापाल  
कृषि महाविद्यालय, द्वितीय वर्ष



# अंकुरण

## ऋग्वेद

सबसे प्राचीन वेद है ऋग्वेद  
देवों की पूजा का इसमें भेद  
जीवन के ज्ञान का होता प्रसार  
कविताओं से देता ज्ञान अपार

- यजमय

## सामवेद

संगीत का है भेड़ार अपार  
गीतों के अर्थ करता साकार  
सुर ताल इसी से हैं आते  
हंसी खुशी का भाव जगा

- चित्रार्थ

## यजुर्वेद

पूजन विधि का देता ज्ञान  
मंत्रों का है ज्ञान महान  
मन को है यह जागृत करता  
हवन यज्ञ का फल है देता

- ईशिता

## अथर्ववेद

राजनीति, भूगोल और विज्ञान  
यह निर्मित है करता कई विद्वान  
देशभक्ति सिखलाता है  
यह नक्षत्रों का ज्ञान बताता है

- वृन्दा

## धनुर्वेद

धनुर्वेद देता सैन्य ज्ञान  
धनुष विज्ञा और विज्ञान  
उनकी शिक्षा और उपयोग  
जीवन रक्षण में सहयोग

- अगस्त्य

## आयुर्वेद

देव है इसके धनवंतरी  
रचना इसकी ऋषियों ने की  
औषधियों का देता ज्ञान है  
सभी रोगों का संपूर्ण समाधान है

- अद्रिज

## शिल्पवेद

विश्वकर्मा ने है बनाया  
ऊर्जा का है भेद बताया  
कला का देता उत्तम ज्ञान  
वास्तु बनाता जीवन आसान

- आर्पिता

## गंधर्व वेद

इसमें है गीत की कला  
वादन का है ज्ञान भला  
दुर्खों को हर लेता है  
शांति का ज्ञान देता है

- प्रत्युष



## अक्षि उपनिषद्

योग ध्यान से सब लो ज्ञान  
ईश्वर की होती पहचान  
कैसे उनको पाना है  
अटल सत्य तक जाना है

- वेदिका

## प्रश्न उपनिषद्

प्रश्नों का है उत्तर देता  
सभी चिंता है हर लेता  
शांत है करता सभी विचार  
सरल हल देता हर बार

- पृशा

## ऐतरेय उपनिषद्

मानव कैसे पैदा होता  
उसमें जीवन कौन है बोता  
अनेक जन्मों का देता ज्ञान  
न्याय देता सबको समान

- वरद

## केन उपनिषद्

जीवन किसने बनाया है  
यह संसार किसने सजाया है  
मोह छोड़ो, लगाओ ध्यान  
ईश्वर को लो तुम भी जान

- श्रीहन

# पत्रिका परिवार

## मुख्य संपादक



नन्दिनी मिश्रा



अदिति बिष्ट



निहारिका देवड़ी

## अभिकल्प



युगल अलचौरी



प्रियांशु कुमार झा



कार्तिक सैनी

## विषय सहयोग



हर्षित दुर्गापाल



भूमिका कांडपाल



प्रज्ञा जैन

मीडिया सहयोगी :

**अमर उजाला**

अन्य सहयोगी :

Shree Golju Traders  
( प्रताप कोशियारी )

चलचित्र सहयोगी:

Fotopandit.com

प्रयोजक :



सह-प्रयोजक :



सह-प्रयोजक :



M/s ANUKRUTEE  
( पुरुषोत्तम )

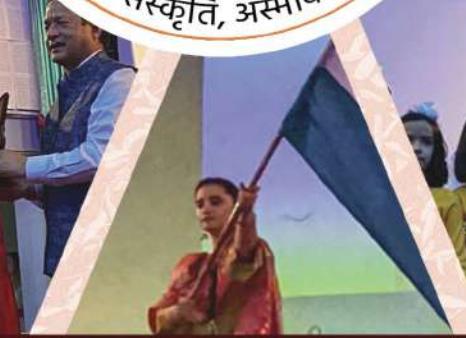
आयुष अग्रवाल  
पूर्व छात, प्रौद्योगिकी महाविद्यालय

पवन कुमार

पूर्व ग्राम प्रधान ,मल्ला निंगलाठ( कैची )

# सांस्कृतिक चेतना परिषद्

गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर



संपर्क हेतु

scppsgbpuat@gmail.com

Sanskritik Chetna Parishad

@scpgbpuat

Sanskritik Chetna Parishad

Scpps.co.in

Sanskritik Chetna Parishad

